टार्च बेचनेवाले

PAGE 41, अभ्यास

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. **लेखक ने टार्च बेचनेवाली कंपनी का नाम 'सूरज छाप' ही क्यों रखा?**

उत्तर- लेखक ने टॉर्चबेचने वाली कंपनी का नाम 'सूरज-छाप इसलिए रखा क्यूंकि जिस तरह सूरज रात के अन्धेरे के बाद दिन में प्रकाश फैलाता है और किसी को डर नहीं लगता उसी प्रकार 'सूरज छाप' टॉर्च रात के अँधेरे में सूरज का काम करेगी 'सूरज छाप 'टोर्च रात के अँधेरे में सूरज की रौशनी का प्रतीक है ।

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. **पाँच साल बाद दोनों दोस्तों की मुलाकात किन परिस्थितियों में और कहाँ होती है?**

उत्तर- पांच साल पहले दोनों दोस्त बेरोजगार थे । पांच साल बाद दोनों दोस्तों की मुलाक़ात प्रवचन स्थल पर होती है ।लेकिन परिस्थिति पहले की तरह नहीं थी । उनमें से एक

टॉर्च बेचने बेचने वाला तथा दूसरा उपदेश देने वाला बन गया है ।

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. **पहला दोस्त मंच पर किस रूप में था और वह किस अँधेरे को दूर करने के लिए टार्च बेच रहा था?**

उत्तर- पहला दोस्त मंच पर संत की तरह था । उसकी वेशभूषा भी संतों की तरह थी वे सुन्दर रेशमी वस्त्र से सजा-धजा था ।वह गुरु-गंभीर वाणी में प्रवचन दे रहा था और लोग उसके उपदेश को ध्यान से सुन रहे थे ।वह आत्मा के अँधेरे को दूर करने के लिए टॉर्च बेच रहा था । उसके अनुसार सारा संसार अज्ञान रुपी अन्धकार से घिरा हुआ है । मनुष्य की अंतरात्मा भय और पीड़ा से त्रस्त है ।वह कह रहा था कि अँधेरे से डरने की जरूरत नहीं है क्योंकि आत्मा के अँधेरे को अंतरात्मा के प्रकाश द्वारा ही दूर किया जा सकता है ।

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. **भव्य पुरुष ने कहा- 'जहाँ अंधकार है वहीं प्रकाश है।' इसका क्या तात्पर्य है?**

उत्तर- भव्य पुरुष ने अपने प्रवचन में कहा की जहाँ अन्धकार है वहीँ प्रकाश है । जैसे हर रात के बाद सुबह आती है उसी प्रकार अन्धकार के बाद रौशनी आती है ।मनुष्य को अँधेरे से

नहीं डरना चाहिए । आत्मा में ही अज्ञान के अँधेरे के साथ ज्ञान की रौशनी होती है ।मनुष्य के अन्दर् की बुराइयों में ही अच्छाई दबी होती है जिसे जगाने की ज़रुरत नहीं होती ।उसके लिए अपने अन्दर ही ज्ञान की रौशनी को ढूँढना पड़ता है । इस प्रकार भव्य पुरुष ने सच ही कहा है कि जहाँ अन्धकार है वहीँ प्रकाश है ।

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. **भीतर के अँधेरे की टार्च बेचने और 'सूरज छाप' टार्च बेचने के धंधे में क्या फ़र्क है? पाठ के आधार पर बताइए।**

उत्तर- भीतर के अँधेरे की टॉर्च यह आत्मा के अन्दर बसे अँधेरे को दूर करने से सम्बंधित है । जहाँ एक तरफ पहला दोस्त अपनी वाणी से लोगों को जागृत करने का काम करता है ।वह अपने प्रवचन से लोगों के अन्दर ज्ञान की रौशनी देना चाहता है । उसका काम लोगों को अज्ञानता रुपी अन्धकार से हटाकर ज्ञान रुपी प्रकाश में लाना है ।इस प्रकार सिद्ध पुरुष ही अज्ञान रुपी अन्धकार को आत्मा से दूर करता है और ज्ञान का दीपक जलाता है ।

वहीँ दूसरी ओर दूसरा दोस्त रात के अँधेरे से बचने के लिए ‘सूरज छाप ‘टॉर्च बेचता है । वह लोगों के अन्दर रात का भय उत्पन्न करता है ताकि वे डरकर टार्च खरीदें । यह टॉर्च बाहर

के अँधेरे को दूर करता है ।रात के अँधेरे में मनुष्यों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है । इस प्रकार वह लोगों को काली अँधेरी रात का डर दिखाकर ‘सूरज-छाप ‘टॉर्च बेचता है ।

दोनों के टॉर्च बेचने के धंधे में बहुत अंतर है । एक आत्मा के अँधेरे को दूर करता है और दूसरा रात के अँधेरे को दूर करता है ।

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. **'सवाल के पाँव ज़मीन में गहरे गड़े हैं। यह उखड़ेगा नहीं।' इस कथन में मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत है और क्यों?**

उत्तर- दोनों मित्रों ने पैसे कमाने के कई तरीके ढूंढने की कोशिश की । दोनों के मन में यही प्रश्न आता था कि पैसे कैसे खूब लायें ।लेकिन इसका हल निकलना आसन नहीं था । बहुत कोशिश करने के बाद भी जब जवाब नहीं मिला तो उनमें से एक ने कहा कि सवाल के पाँव जमीन में गहरे गड़े हैं । यह उखड़ेगा नहीं । यह कथन मनुष्य की उस प्रवृति की ओर संकेत करता है जैसे जवाब न मिलने पर मनुष्य उस सवाल को टाल देना ही उचित समझता है । ऐसा इसलिए है

क्योंकि किसी अनसुलझे सवाल में दिमाग लगाकर समय गंवाना व्यर्थ होता है ।

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. **'व्यंग्य विधा में भाषा सबसे धारदार है।' परसाई जी की इस रचना को आधार बनाकर इस कथन के पक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए।**

उत्तर- लेखक हरिशंकर परसाई की रचना ‘टॉर्च बेचने वाले ‘एक व्यंगात्मक रचना है । इस पाठ में लेखक ने समाज में फैले अंधविश्वास तथा पाखंडी साधू-संतों द्‌वारा रचे गए ढोंग से बचकर रहने का सन्देश दिया है ।ऐसे लोग भोलो भाली जनता को अँधेरे का डर दिखाकर पैसे कमाते हैं । हमें ऐसे अंधविश्वास और पाखंड से बचना चाहिए । लेखक ने इस व्यंग्य रचना के माध्यम से यह समझाने की कोशिश की है कि धर्म और अध्यात्म के नाम पर पैसे ठगने वाले इन ठगों के चंगुल में हमें नहीं फँसना चाहिए ।इस प्रकार ‘व्यंग्य-विधा’ के माध्यम से भाषा प्रभावशाली हो जाती है तथा लोगों के मन पर इसका अधिक प्रभाव पड़ता है ।

PAGE 42, अभ्यास

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:9

8. **लेखक ने 'सूरज छाप' टार्च की पति क्यों फेंक दिया ? क्या आप भी वही करते ?**

उत्तर- लेखक ने ‘सूरज छाप ‘टॉर्च को नदी में इसलिए फ़ेंक दिया क्योंकि उसने सोचा की इस टॉर्च बेचने वाले रोजगार से तो ज्यादा कमाई हो नहो रही क्यों न मैं भी अपने दोस्त की तरह संत बनकर ज्ञान रुपी अँधेरे को दूर भगाऊं इसमें गाडी बंगला कपडे रुपये सब हैं ,मेरे काम में तो रुपये पैसे ही नहीं है ,इसी सोच की वजह से उसने अपनी पेटी को नदी में फ़ेंक दिया ।

मैं बिलकुल भी वैसा नहीं करता क्यूंकि जो रोजी रोटी सच्चाई के साथ कमाई जाए उसे जीने में ज्यादा आनंद है । लोगों को मुर्ख बनाकर क्या उससे रुपये लूटकर कोई फायदा नहीं ।बेईमानी के रास्ते बहुत होते हैं और उसके परिणाम भी वैसे ही भयंकर होते हैं । इसलिए बेहतर है की सरल जीवन और सच्चाई की रोटी खायी जाए न की लोगों को मुर्ख बनाकर ।

11:3:1: प्रश्न-अभ्यास:10

9. **टार्च बेचने वाले किस प्रकार की स्किल का प्रयोग करते है ? क्या इसका 'स्किल इंडिया ' प्रोग्राम से कोई सम्बन्ध है ?**

उत्तर- टॉर्च बेचने वाले कई तरह का स्किल का प्रयोग करते हैं जैसे कि:

1.बोलने का तरीका

२.ग्राहक को आकर्षित करने का तरीका

3.उसे हर तरह के फायदे बताकर .

4.प्रचार करना

मेरे अनुसार इसका स्किल इंडिया प्रोग्राम से कोई सम्बन्ध नहीं है। ये तो कला खुद की होती है ,या खुद में इसको लाया जाता है कि किस प्रकार अपना सामन लोगों तक पहुंचाएं। बेचनेवाला तरह तरह का प्रचार प्रसार करता है जिससे कि खरीदने वाला आकर्षित हो जाए।